

उसकी सहायक रहती है और नायक से उसे मिलाने का प्रयास करती है 3. एक सममात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 14 मात्राएँ होती हैं, अंत में यगण या मगण होता है।

**सखीभाव** पुं. (तत्.) वैष्णव संप्रदाय में भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करते हैं।

**सखी संप्रदाय** पुं. (तत्.) वैष्णवों का एक संप्रदाय, जिसकी स्थापना स्वामी हरिदास ने की थी, इसमें भक्त अपने आपको श्रीकृष्ण की सखी मानकर उनकी उपासना और सेवा करते थे, भक्त प्रायः स्त्रियों की वेशभूषा में रहकर उनके समान आचार-व्यवहार आदि करते थे।

**सखुआ** पुं. (तद्.) शाल वृक्ष।

**सखुन** पुं. (फा.) 1. बातचीत, बात, उक्ति 2. वचन, कौल 3. कविता, पद्य रचना, काव्य।

**सखुनचीन** वि. (फा.) चुगली करने वाला, चुगलखोर, इधर की बात उधर लगाने वाला।

**सखुनतकिया** पुं. (फा.) वह शब्द या वाक्यांश जो बातचीत करने में प्रायः मुँह से निकला करता है, तकिया कलाम।

**सखुनदाँ** वि. (फा.) 1. वाक्पटु, सुवक्ता 2. वह जो सखुन अर्थात् काव्य अच्छी तरह समझता है, काव्य का रसिक।

**सखुनदानी** स्त्री. (फा.) वाक्पटु होने का भाव या गुण, सखुनदाँ होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सखुनपरवर** पुं. (फा.) 1. वह जो अपनी बात पर दृढ़ रहता है 2. बात का धनी 3. वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो।

**सखुन शनास** पुं. (फा.) 1. काव्य का मर्मज्ञ, वह जो सखुन या काव्य भली-भाँति समझता हो 2. वह जो बातचीत का अर्थ ठीक तरह से समझता हो।

**सखुन संज** पुं. (फा.) 1. काव्य का मर्मज्ञ 2. अपनी बात पर दृढ़ रहने वाला, बात का धनी।

**सखुन साज** पुं. (फा.) 1. काव्य-रचना करने वाला, सखुन कहने वाला 2. कवि, शायर 3. वह जो प्रायः झूठी मनगढ़न्त बातें कहा करता हो।

**सखत** वि. (अर.) 1. कठोर, कड़ा 2. दृढ़, पक्का 3. कठिन, मुश्किल 4. तीक्ष्ण, प्रखर, तेज, तीखा 5. तीव्र, प्रचंड, उग्र 6. दयारहित, निर्मम, निर्दय, क्रूर।

**सखती** स्त्री. (फा.) 1. कठोरता, कड़ापन, कठिनता 2. तीक्ष्णता, तीव्रता, प्रचंडता 3. निर्दयता, निर्ममता 4. व्यवहार आदि की उग्रता या कठोरता।

**सख्य** पुं. (तत्.) 1. मित्रता, सखापन, दोस्ती, सौहार्द 2. ईश्वर को सखा मानकर उपासना करने का भाव (वैष्णव संप्रदाय)।

**सख्यता** स्त्री. (तत्.) 'सख्य' का भाव, मैत्री का भाव या गुण।

**सगंध** वि. (तत्.) गंधयुक्त, खुशबूदार, महकदार पुं. अभिमानी, घमंडी।

**सग** पुं. (फा.) कुत्ता वि. सगा, अपना।

**सग जुबान** पुं. (फा.) ऐसा घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते की जीभ के समान पतली और लंबी हो।

**सगड़ी** स्त्री. (तद्.) दो पहिए की हाथ से खींची जाने वाली मजबूत गाड़ी, जो भारी बोझ लादने के काम आती है, छोटा सगगण।

**सगण** पुं. (तत्.) 1. शिव का एक नाम 2. छंदशास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु के बाद एक गुरु आता है वि. दल सहित, सेना सहित, गणयुक्त।

**सगत** स्त्री. (तद्.) 1. शक्ति, सामर्थ्य 2. पार्वती, शिव की पत्नी।

**सगती** स्त्री. (तद्.) शक्ति, सामर्थ्य।

**सगबग** वि. (अनु.) 1. लथपथ, सराबोर, आर्द्र, द्रवित 2. तत्काल, तुरंत क्रि.वि. तेजी से, जल्दी से, चटपट।

**सगबगाना** क्रि. (अनु.) 1. सकपकाना, शंकित होना 2. लथपथ होना, भीगना या सराबोर होना 3. हिलना-डोलना 4. जल्दी या फुरती करना।